किशोरी सशक्तिकरण में पुरुषों एवं किशोरों की सहभागिता

क्या है पहल

उमंग, आई.सी.आर.डब्ल्यू द्वारा परिकल्पित तथा आई.के.ई.ए. फाउंडेशन द्वारा समर्थित, किशोर लड़कियों के सशक्तिकरण का एक व्यापक, एवं बहुस्तरीय कार्यक्रम है। इस कार्यक्रम का उद्धेश्य झारखंड के गोड्डा और जमताड़ा जिलों में लड़कियों की स्कूल उपस्थिति में वृद्दि एवं बाल विवाह की प्रथा को कम करना है। आई.सी.आर.डब्ल्यू ने इस कार्यक्रम को साथी, बदलाव फाउंडेशन और पी.सी.आई. की साझेदारी तथा झारखंड सरकार के अहम सहयोग से लागू किया। यह कार्यक्रम व्यक्तिगत (किशोरियों), परिवार (माता–पिता, भाई–बहन), समुदाय (पुरुष, लड़के, महिलाएं व अन्य सामुदायिक सदस्य), तथा सिस्टम (स्कूल, स्थानीय सरकारी निकाय जैसे पी.आर.आई, बाल संरक्षण तंत्र, आदि) स्तरों पर कार्यक्रम बहुस्तरीय हस्तक्षेप के लिए सामाजिक–पारिस्थितिक ढांचे और लिंग परिवर्तनकारी दृष्टिकोण का उपयोग करता है।

उमंग कार्यक्रम का उद्देश्य बाल विवाह में निरंतर गिरावट लाने और बालिकाओं के महत्व को बढ़ावा देना है। समूह शिक्षा सत्र, स्कूल अभियान और खेल में लड़कियों को शामिल करने जैसी अंतर स्कूल और बाह्य स्कूल स्तर की गतिविधियों के माध्यम से किशोर लड़कियों और लड़कों के साथ सीधे जुड़ने के अलावा, 'पुरुषत्व और लैंगिक असमानता पर विचार करने के लिए पुरुषों और लड़कों के समूहों को एक साथ लाना' इसे प्रमुख हस्तक्षेपों में से एक माना जाता है क्योंकि पुरुष और लड़के पारिवारिक पारिस्थितिकी तंत्र में मुख्य हितधारक हैं तथा भारत जैसे पितृसत्तात्मक समाज में उनके साथ जुड़ना और यथास्थिति को बदलने और लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के प्रयासों में महत्वपूर्ण है।

हमने इसे कैसे किया

उद्धेश्य

उमंग में पुरुषों एवं लड़कों को सम्मिलित करने की पहल का उद्धेश्य लैंगिक मानदंडों से संबंधित आत्मचिंतन तथा व्यवहार में परिवर्तन को बढ़ावा देना, लड़कियों का मान बढ़ाना, पुरुषों व लड़कों में सकारात्मक पुरुषत्व को बढ़ावा देना और समुदाय में किशोरियों के लिए एक सहायक व सक्षम वातावरण तैयार करना है। इस पहल का उद्देश्य लैंगिक भेदभाव, बाल विवाह के नकारात्मक प्रभाव, पुरुषत्व, पितृत्व के मुद्दों पर पिता और बेटियों/बेटों के बीच संचार को बढ़ाना और उन्हें बाल विवाह से जुड़ी नकारात्मक मान्यताओं, दृष्टिकोण और सामाजिक मानदंडों को चुनौती देने में सक्षम बनाना है। परिवार और सामुदायिक स्तर पर ''लड़कियों के महत्व'' के प्रति संवेदनशील बनाना है।

प्रगतिशील दृष्टिकोण

पुरुषों एवं लड़कों को विभिन्न स्तरों पर शामिल करने हेतु दो रणनीतियों की योजना बनाई गई तथा उन्हें लागू किया गया। पहली रणनीति में जिला स्तर पर वार्षिक कार्यशालाएं, ब्लॉक स्तर पर छमाही कार्यशालाएं, और पंचायत स्तर पर तिमाही कार्यशालाएं, आयोजित करना शामिल था। इन कार्यशालाओं का उद्देश्य लिंग और पुरुषत्व के मुद्दों पर परिप्रेक्ष्य बनाना और हितधारकों को संवेदनशील बनाना और किशोरियों के सशक्तिकरण के मुद्दों में हितधारकों को शामिल करना है। पीआरआई सदस्यों, धार्मिक नेताओं, युवाओं और प्रमुख सामुदायिक हितधारकों ने पंचायत–स्तरीय कार्यशालाओं में भाग लिया। इसी प्रकार, ब्लॉक स्तरीय कार्यशालाओं में विभिन्न विभागों और पीआरआई सदस्यों ने भाग लिया। जिला स्तर पर चर्चा का नेतृत्व उपायुक्त (डीसी) ने किया, ब्लॉक स्तर पर खंड विकास अधिकारी (बीडीओ) ने और पंचायत स्तर पर मुखिया ने चर्चा का नेतृत्व किया। प्रत्येक कार्यशाला में लगभग 50 लोगों ने भाग लिया। इन कार्यशालाओं के दौरान विशिष्ट कार्य योजनाएं तैयार की गईं, जिनमें किशोरियों के लिए पोस्टर प्रतियोगिताएं, प्रदर्शनियां, वाद–विवाद और स्वतंत्रता दिवस, झारखंड दिवस, अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस, राष्ट्रीय बालिका दिवस आदि पर किशोरियों द्वारा ध्वजारोहण और भाषण जैसी गतिविधियां शामिल थीं। उन माता–पिता को सम्मानित करने के लिए गतिविधियों की योजना बनाई गई जिन्होंने अपनी बेटी की उच्च शिक्षा में सहायता की। दूसरी रणनीति में हर महीने 60–90 मिनट की चर्चा आयोजित करने के लिए 212 गांवों में युवाओं की (सहमति से) मैपिंग एवं सूचीकरण का कार्य शामिल था।

शुरुआती चर्चा 19–25 वर्ष की आयु के युवाओं के साथ आरंभ हुई, परंतु रुचि, समय की उपलब्धता तथा समुदाय स्तर पर गतिशीलता देखने के पश्चात् अपेक्षाकृत बुजुर्ग पुरुषों के लिग अलग–अलग समूह बनाए गये। पुरुषों और लड़कों के साथ चर्चा करने के लिए लैंगिक और पुरुषत्व पर एक पाठ्यक्रम तैयार किया गया। मसौदा पाठ्यक्रम में 20 सन्न शामिल थे। समुदाय में पुरुषों और लड़कों के साथ मसौदा पाठ्यक्रम का पूर्व परीक्षण किया गया। पूर्व परीक्षण के पश्चात् सभी 20 सन्नों को संशोधित कर 12 सन्नों में पुनर्गठित किया गया। इस पाठ्यक्रम का उपयोग समूह बैठकों के दौरान सत्रों को सुगम बनाने के लिए किया गया।

इसके साथ ही, लैंगिक समानता का समर्थन जारी रखने के लिए उनके बीच सामाजिक दबाव बनाने हेतु युवाओं के साथ संकल्प हस्ताक्षर अभियान भी चलाया गया।

सहयोगात्मक प्रयास

संभावित और साझा उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए नेहरू युवा केंद्र (एन.वाई.के) के 90 युवाओं को पुरुषों और लड़कों के साथ चर्चा में सहायता करने के लिए लैंगिक समानता के बारे में जागरूक किया गया। इसी तरह, 32 फील्ड फैसिलिटेटरों को पाठ्यक्रम पर पुरुषों और लड़कों के साथ चर्चा को सुगम बनाने के बारे में प्रशिक्षित किया गया।

चुनौतियां और समाधान

ओ.बी.सी और एस.टी समुदाय के पुरुषों व लड़कों ने चर्चा में सक्रिय रुप से भाग लिया, जबकि अन्य सामुदायिक वर्गों के पुरुषों की भागीदारी सीमित थी। कुछ विषयों जैसे अंतर्जातीय विवाह, प्रेम विवाह, लड़कों के साथ दोस्ती, तथा लड़कियों का नौकरी पेशा होना, जैसे कुछ विषयों पर काफी बहस हुई। इसी तरह पितृसत्ता, पुरुषत्व, और लैंगिकता पर चर्चा करने पर कभी–कभी असहमति या बहस हुई। हालांकि, एन.वाई.के के युवाओं व फील्ड सहायकों की उपस्थिति ने बहस को नियंत्रित करने में मदद् की। बैठकों और चर्चाओं में 26 से 50+ वर्ष की आयु के लोगों की उपस्थिति अधिक पाई गई। हालांकि, युवाओं ने टूर्नामेंट खेलने जैसी गतिविधियों में किशोरियों की सक्रिय रुप से सहायता की। जबकि खेलकूद गतिविधियों के लिए संसाधन जुटाना एक चुनौती थी, कुछ पी.आर.आई. किशोरियों के लिए खेलकूद एवं कार्यक्रमों के लिए संसाधन साझा करने में सक्षम थे। इसी तरह जिला और ब्लॉक स्तर के अधिकारियों ने भी कार्यक्रम को अपना सहयोग दिया।

फील्ड की आवाज

- ''जेंडर शब्द सुने थे, परंतु इसका मतलब अब समझ में आया''
- ''यह चर्चा बुजुर्गों के साथ निरंतर करने की जरुरत है''
- ''हम अपने रोल को अभी तक इतनी गहराई से नहीं सोचते थे''
- ''हम लोग लड़कियों को खेल में मदद कर उन्हें फुटबॉल के जिला स्तरीय टूर्नामेंट में पहुंचाए हैं''
- ''हम अपने पंचायत में किशोरी सशक्तिकरण की जिम्मेदारी तो ले ही सकते हैं''
- ''छोटी–छोटी हिंसा का असर कितना अधिक हो सकता है, यह अब समझ में आया''
- ''पहले चर्चा में भाग लेना समय की बरबादी समझता था, परंतु अब चर्चा का इंतजार रहता है''
- ''हमारी पंचायत की ग्राम सभा बैठक में उमंग की किशोरियों को भी बुलाया जाता है''
- ''पर ऐसे भी उदाहरण हैं कि कुछ लड़कियां पढ़ लिखकर अपनी मनमानी करती हैं''
- ''अभी हमारे यहां लड़कियां इतनी समझदार नहीं हैं कि शादी का निर्णय खुद लें''
- ''हमारी पंचायत ने 15 किशोरियों की फुटबॉल टीम को जर्सी एवं शूज के लिए मदद की और टीम ने जिला स्तर की प्रतियोगिता जीती''
- ''हमें कुछ छूट मिली है तो हमारे ऊपर पैसा कमाने एवं घर चलाने की जिम्मेदारी भी ज्यादा है''

क्या कहते हैं आंकड़े

- कुल मिलाकर 212 गांवों में 18409 पुरुषों और लड़कों के साथ 716 समूह बनाए गये।
- विभिन्न आयु वर्गों के लिए अलग–अलग समूह बनाए गये हैं जैसे 15–18 वर्ष, 19–25 वर्ष तथा 26–50+ वर्ष।
- लगभग 4700 पुरुषों एवं लड़कों ने पांच से अधिक सत्रों में भाग लिया।

निष्कर्ष

पुरुषों और लड़कों को शामिल करने से परिप्रेक्ष्य बनाने और उन्हें लैंगिकता एवं पुरुषत्व के मुद्दों पर संवेदनशील बनाने में मदद मिली। इन कार्यक्रमों ने किशोरियों के लिए एक अनुकूल माहौल बनाने में मदद की जो इन लड़कियों के भविष्य को आकार देने में दीर्घकालिक प्रभाव डाल सकता है। यह लड़कियों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने, रोजगार के अवसरों की आकांक्षा रखने तथा उन्हें जीवन में आगे बढ़ने हेतु माता–पिता का अधिक समर्थन प्राप्त करने में मदद कर रहा है।

हम उमंग टीम के उन समर्पित सदस्यों के प्रति अपना आभार व्यक्त करते हैं, जिनके सामूहिक प्रयासों ने इस पहल को सफल बनाया; आपके अमूल्य योगदान के लिए धन्यवाद– नसरीन जमाल, शक्ति घोष, नितिन दत्ता, पारसनाथ वर्मा, बिनित झा, त्रिलोकी नाथ, रवि वर्मा, अमाजित मुखर्जी, प्रणिता आच्युत, संदीपा फांडा, अनुराग पॉल और राजेंद्र सिंह।

प्राथमिक लेखकः पारसनाथ वर्मा, रवि वर्मा, राजेंद्र सिंह, नसरीन जमाल एवं अमाजित मुखर्जी

ICRW INTERNATIONAL CENTER FOR RESEARCH ON WOMEN

SATHEE साथी

BADLAO FOUNDATION INITIATIVE FOR CHANGE

आई.सी.आर.डब्ल्यू एशिया रिजनल ऑफिस
मॉड्यूल नंबर-410, फोर्थ फ्लोर, एन.एस.आई.सी बिजनेस पार्क बिल्डिंग
ओखला इंडस्ट्रियल स्टेट, नई दिल्ली - 110020, भारत
फोनः +91-11-46643333 | फैक्सः 91-11-24635142
ईमेलः info.india@icrw.org
वेबसाइटः www.icrw.org/asia

आई.सी.आर.डब्ल्यू जामताड़ा प्रोजेक्ट ऑफिस
ग्राउंड फ्लोर, 726-ए/1 पी2, कृष्णा नगर,
मिहिजम, जमताड़ा, झारखंड - 815354